बिहारी लाल नन्दा द्वारा क्षमा याचना व गुरु शिक्षा

जलज्योतिशाह जी (सुथरेशाह जी) ने जब आँख खोली तो सबसे पहले मीरी पीरी के शहनशाह श्री हरगोबिन्द साहिब जी महाराज के दर्शन किए। उन्हीं की गोद में उन्होंने मुस्कुराना सीखा। वे बड़े प्यार से बालक के मुँह में रूई को दूध में भिगोकर निचोड़ते इस तरह बालक को दूध पिलाते। बालक जन्म से ही नटखट था। वह भी गुरु महाराज जी की अंगुली को अपने दाँतों से पकड़ लेता व मुस्कुराता तब गुरु महाराज उसके इस रूप पर मुग्ध हो जाते व कहते इसीलिए भगवान बच्चों को दाँत नहीं देता। इस तरह बालक का शैशव गुरु चरणों में बीतने लगा।

इधर श्री बिहारी लाल जी से अपनी पत्नी का दारुण दुख देखा नहीं जा रहा था। उन्होंने बच्चे की खोज खबर ली। पूछताछ करने पर पता चला कि गुरु नानक गद्दी के छठे गुरु श्री हरगोबिन्द साहिब जी महाराज संत मंडली के साथ जा रहे थे। उन्होंने जब बच्चे को झाड़ियों में पड़ा देखा तो वे उसे अपने साथ ही ले गए। बिहारी लाल नन्दा जी ने शहनशाह की हजूरी में आकर माफी माँगी और बच्चे को वापिस लौटाने के लिए कहा पर शहनशाह ने बालक को उन्हें देने से मना कर दिया। इस तरह उन्हें बच्चे के माता-पिता की जानकारी मिली। बालक गुरु महाराज की छत्रछाया में उनके बच्चों की भान्ति ही पलने-बढ़ने लगा। गुरु महाराज का पुत्र होने के नाते उन्हें वह सारी निधियाँ मिलीं जिससे वह सांसारिक जीवन को सुविधा और शान के साथ बिता सके। गुरु महाराज जी के जो गुण और शक्तियाँ थीं वह एक बेटा होने के नाते सुथरा जी में भी सन्निहित हुईं। ऐसा कोई अधिकार शेष नहीं था जो गुरु महाराज ने उन्हें न दिया हो। यदि धरती तैयार हो और बुद्धिमान कृषक ठीक समय पर ठीक ऋतु में बीज बो दे तो उसे अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होने में विलम्ब नहीं लगता । अनन्त जन्मों के साधनों से उर्वरा बनी हुई एवं गुरु महाराज की कृपा और स्नेह के जल से सिंचित सुथरा जी

की अन्तः करण की भूमि में जब गुरुजी ने प्रेम और भक्ति के बीज बोए तो उन्हें अंकुरित होने में देर न लगी।

एक बार संगत में किसी श्रद्धालु ने गुरु महाराज जी से पूछा गुरुदेव स्वर्ग का अधिकार किसे मिलता है? पास में ही जलज्योतिशाह जी (सुथरे शाह जी) अपनी मस्ती में खेलते हुए चारों ओर आनन्द बिखेर रहे थे, श्री गुरु महाराज जी ने इनकी ओर संकेत करते हुए कहा- ‘इसे।’ ‘मैं आपका आशय नहीं समझा’- श्रद्धालु ने कहा। श्री गुरु महाराज जी मुस्कुराए और बोले - ‘जो इस बच्चे की तरह सरल और निरहंकारी है, वही स्वर्ग का अधिकारी है।’